सामाजिक समरसता

कवि परिचय :

नरोत्तम दास

नरोत्तम दास का जन्म सीतापुर के बाड़ी ग्राम के ब्राह्मण परिवार में सन् 1493 में हुआ। उनके सम्बन्ध में पूरी जानकारी उपलब्ध नहीं है। विद्वानों में नरोत्तमदास के जन्म के सम्बन्ध में मतभेद हैं।

नरोत्तमदास की दो रचनाओं का उल्लेख मिलता है - सुदामा-चरित और ध्रुव-चरित। विचारमाला नामक ग्रन्थ का भी उल्लेख मिलता है किन्तु उपलब्धता सिर्फ 'सुदामा चरित' की है। अपने इसी ग्रंथ के कारण आपकी कीर्ति अक्षय है।

नरोत्तम दास के खण्डकाव्य (सुदामा चरित) मे भावों का बड़ा ही मार्मिक एवं प्रभावशाली वर्णन है। मित्रता की जैसी अभूतपूर्व व्यंजना उन्होंने की है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सुदामा के आत्म सम्मान और कृष्ण के मैत्रीभाव को उन्होंने प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया है। यह काव्य अनुभूति पूर्ण है।

नरोत्तम दास की भाषा सरल व सजीव ब्रजभाषा है। शब्दचयन सरस, सहज, तथा स्वाभाविक है। प्रसादगुण युक्त भाषा में मुहावरों का यथास्थान सटीक प्रयोग है। अलंकारों व छंदों का प्रचुरता से सार्थक प्रयोग है।

हिन्दी साहित्य जगत के भक्तिकालीन कवियों में नरोत्तमदास जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

समरसता पारस्परिक प्रेम पर आधारित भाव है। संवेदना विस्तार से ही समरसता का वातावरण बनता है। वर्ण-वर्ग भेद की सीमाएँ समरसता में नहीं रहती हैं। करुणा और स्नेह जैसी भाववृत्तियाँ ही समरसता का सृजन करती हैं। कविता का सदैव यही प्रयास रहा है कि वह श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा कर मनुष्य की संवेदनशीलता का दायरा बढ़ाए। कविता अनुभूति के स्तर पर एक साझा संसार रचती है और यह संसार अमीरी-गरीबी का दायरा पाटकर पारस्परिक आपूरिकता में प्रकट होने लगता है।

कृष्ण और सुदामा का जो मैत्री भाव है वह समरसता का सर्वोपरि उदाहरण है। मित्र की वेदना को अपनी वेदना समझने वाले ही सज्जन कहे जाते हैं। कृष्ण भी अपने मित्र सुदामा की दीनता से आहत हो अपनी अमीरी भूल जाते हैं। इसी भाव निमग्नता का मर्मस्पर्शी एवं प्रभावशाली वर्णन नरोत्तमदास की कविता 'सुदामा चरित' में दृष्टव्य है। महाकवि तुलसी अपने समय के समाज को जिस समरसता से पूर्ण करना चाहते थे वह समरसता उनके लोक-मंगल विधान की आधार भूमि है। तुलसी का लोक-मंगल, समन्वय की साधना का परिणाम है। उनकी लोक मंगल-भावना के केन्द्र में राम का चरित्र है। इस भावना से परिपूर्ण होने के कारण ही राम का चरित्र युग-युग के लिए आदर्श चरित्र है। वे लोक नायक इस रूप में हैं कि उन्होंने अपने आचरण से सामाजिक समरसता का वातावरण निर्मित किया। केवल निषाद से ही नहीं वृक्ष और बंदरों से भी मैत्री करके उन्होंने अपनी सामाजिक समरसता का प्रमाण दिया है। राम के चरित्र में निहित संवेदना प्रसार के माध्यम से महाकवि तुलसी ने समाज की अनेक विषमताओं को समाप्त करने का आदर्श प्रस्तुत किया है। शबरी प्रसंग के इस काव्यांश में तुलसीदास ने राम की उस सहृदयता की अभिव्यक्ति की है, जो वनवासी भीलनी को भी अपना लेते हैं। उनका यह कथन है कि वे जाति, धर्म, विद्या, बल आदि को महत्त्व ही प्रदान नहीं करते हैं। वे मात्र भक्ति और प्रेम का ही संबंध मानते हैं। वे केवल कहते ही नहीं हैं, वे शबरी के साथ किए अपने व्यवहार को इस प्रकार प्रकट भी करते हैं। वे नवधा भक्ति से शबरी को परिचित कराते हैं। इस प्रसंग में नारी-सम्मान की भावना का महत्त्व है।

सुदामा चरित

विप्र सुदामा बसत हो, सदा आपने धाम।
भीख माँगि भोजन करे, हिये जपत हरि नाम ॥
ताकी घरनी पतिव्रता, गहै बेद की रीति।
सलज सुसील सुबद्धि अति, पति-सेवा सौं प्रीति ।।
कहो, सुदामा एक दिन, कृष्ण हमारे मित्र।
करत रहति उपदेश तिय, ऐसो परम विचित्र ॥

स्त्री

लोचन-कमल दुख-मोचन तिलक भाल,
स्रबननि कुंडल मुकुट धरे माथ है ।
ओढ़े पीत बसन गरे में, बैजयंती माल,
संख चक्र गदा और पद्म लिये हाथ है॥

कहत नरोतम संदीपनि गुरू के पास।
तुम ही कहत हम पढ़े एक साथ हैं ॥
द्वारिका के गए हरि दारिद हरैंगे पिय,
द्वारिका के नाथ वै अनाथन के नाथ हैं ॥

सुदामा

सिच्छक हौं सिगरे जग को तिय, ताको कहा अब देति है सिच्छा
जे तप ते परलोक सुधारत, संपति की तिनके नहि इच्छा

मेरे हिये हरि के पद पंकज, बार हजार लै देख परीच्छा।
औरन को धन चाहिए बावरि, बामन को धन केवल भिच्छा।

स्त्री

कोदा सवाँ जुरतो भरि पेट न, चाहति हौं दधि दूध मिठौती।
सीत वितीत कियो सिसयातहि हों, हठती पैं तुम्हें न हठौती ॥

जो जनती न हितू हरि सों तुम्हे काहे को द्वारके पेलि पठौती ।
या घर तें न गयो कबहूँ पिय, टूटो तवा अरु फूटी कठौती ॥

सुदामा

छांड़ि सबै जक तोहिं लगी बक, आठहु जाम यहै जक ठानी ।
जातहिं दैहें लदाय लढ़ा भरि, लैहों लदाय यहैं जिय जानी ॥

पावैं कहाँ ते अटारी अटा, जिनके विधि दीन्हीं है टूटी-सी छानी।
जो पै दरिद्र लिखो है ललाट तो, काहू पै मेटि न जात अजानी ॥

स्त्री

बिप्र के भगत हरि जगत विदित बंधु, लेत सब ही की सुधि ऐसे महादानि हैं ।
पढ़े एक चटसार कहीं तुम कैयो बार, लोचन-अपार वै तुम्हें न पहिचानि हैं ।

एक दीनबंधु, कृपासिंधु फेरि गुरुबंधु, तुम-सम कौन दीन जाको जिय जानिहै?
नाम लेत चौगुनी, गए तें द्वारा सौगुनी सो, देखत सहस्त्र गुनी प्रीति प्रभु मानिहै॥

सुदामा

द्वारिका जाहु जू द्वारिका जाहू जू, आठहु जाम यहै जक तेरे ।
जौ न कहो करिए तो बड़ो दुख, जैए कहाँ अपनी गति हेरे॥

द्वार खरे प्रभु के छरिया, तहँ भूपति जान न पावत नेरे ।
पाँच सुपारी तें देंखु विचारिकैं, भेंट को चारि न चाउर मेरे ॥

यह सुनिके तब ब्राह्मनी, गई परोसिनि-पास।
पाव-सेर चाउर लिए, आई सहित हुलास॥
सिद्धि करी गनपति सुमिरि, बांधि दुपटिया खूँट।
माँगत खात चले तहाँ, मारग बाली-बूट॥

दीठि चकचौंधि गई देखते सुबर्नमई,
एक तें सरस एक द्वारिका के भौन हैं ।
पूछे बिन कोऊ कहूं काहू सौं न करें बात,
देवता से बैठे सब साधि-साधि मौन हैं ॥

देखत सुदामें धाय पौरजन गहे पाय,
कृपा करि कहौ विप्र कहाँ कीन्ह गौन है?
धीरज अधीर के, हरन पर पीर के,
बताओ बलबीर के महल यहाँ कौन है?

द्वारपाल

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु जाने को आहि, बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी दुपटी, अरूपाँय उपानह की नहि सामा॥

द्वार खरौ द्विज दुर्बल एक, रहयो चकि सौ बसुधा अभिरामा ।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा ॥

बोल्यौ द्वारपालक 'सुदामा' नाम पांडे, सुनि, छाँड़े राज-काज ऐसे जी की गति जाने को ?

द्वारिका के नाथ हाथ जोरि घघा गहे पाँय, भेंट लपटाय करि ऐसे दुख सानै को ?

नैन दोऊ जल भरि पूछत कुसल हरि, बिप्र बौल्यौ बिपदा में मोहि पहिचानै को ?

जैसी तुम करी तैसी करै को कृपा के सिन्धु। ऐसी प्रीति दीनबंधु! दीनन सो मानै को ?

ऐसे बेहाल बेवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए ॥

देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयौ नहिं नैनन के जल सों पग धोए ॥

श्रीकृष्ण

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।
चांपी पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेत॥

आगे चना गुरु-माता देत ते लए तुम चाबि हमें नहिं दीने।
स्याम कहो मुसुकाय सुदामा सों, चोरी की बानि मैं हो जू प्रबीनें ॥

पोटरी काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा-रस भीने।
पाछिली बानि अजौ न तजौ तुम, तैसेइ भाभी के तंदुल कीने॥

देनो हुतो सो दै चुके, बिप्र न जानी गाथ।
चलती बेर गोपालजू, कछु न दीन्हौ हाथ ॥

सुदामा

वह पुलकनि वह उठि मिलनि, वह आदर की भांति ।
यह पठवनि गोपाल की, कछु न जानी जाति॥
घर-घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज ।
कहो भयौ जो अब भयौ, हरिको राज- समाज ॥
हौं कब इत आवत हुतौ, बाही पठयौ ठेलि।
कहिहौ धन सो जाइकै, अब धन धरौ सकेलि ॥

वैसेई राज-समाज बने, गज-बाजि घने, मन संभ्रम छायौ।
वैसेई कंचन के सब धाम है, द्वारिकै माहि नौं फिरी आयौ।
भौन बिलोकि बे को मन लोचत-सोचत ही सब गाँव मँझायो ।
पूछत पांडे फिरे सबसों, पर झोंपरी को कहुँ खोज न पायो ।

कनक दंड कर मैं लिए, द्वारपाल है द्वार ।
जाय दिखायौ सबनि लै, या है महल तुम्हार ॥
टूटी-सी मड़ैया मेरी परी हुती याही ठौर,
तामैं परो दुःख काटौं हेम-धाम री।
जेवर-जराऊ तुम साजे प्रति अंग-अंग,
सखी सोहें, संग वह छूछी हुती छाम री ॥
तुम तौ पटंबर री ओढ़े हौं किनारीदार
सारी जरतारी, वह ओढ़े कारी कामरी ।
मेरी वा पॅड़ाइन तिहारी अनुहार ही पै,
विपदा-सताई वह पाई कहाँ पामरी?

के वह टूटी-सी छानी, हती, कहै कंचन के सब धाम सुहावत ।
कै पग मैं पनहीं न हुती, कहै लै गजराजहु ठाढ़े महावत॥
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत ।
के जुरतो नहीं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तै दाख न भावत ॥

शबरी प्रसंग

कवि परिचय :

तुलसीदास

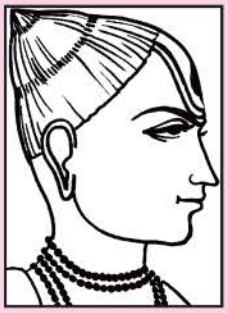

तुलसीदास का जन्म बाँदा जिले (उत्तरप्रदेश) के राजापुर गाँव में सन 1532 में हुआ था। कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान सोरों भी मानते हैं। तुलसी का बचपन घोर कष्ट में बीता। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही माता-पिता से उनका विछोह हो गया। गुरू नरहरि दास की कृपा से उन्हें राम भक्ति का मार्ग मिला। रत्नावली से उनका विवाह होना और पत्नी की बातों से प्रभावित होकर गृह त्याग करना प्रसिद्ध है किन्तु इसके पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। विरक्त होने के बाद वे काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि अनेक तीर्थों में भ्रमण करते रहे। सन् 1574 में अयोध्या में उन्होंने 'रामचरित मानस' की रचना आरम्भ की किन्तु उसका कुछ अंश काशी में भी लिखा। बाद में वे काशी में रहने लगे। वहीं सन् 1623 में उनका देहावसान हो गया। तुलसीदास मानवता के कवि हैं। सामाजिक समरसता, समन्वयवादी, लोकमंगल की भावना उनके साहित्य में कूट-कूट भरी है। उनका भाव क्षेत्र व्यापक है। मानव-प्रकृति और जीवन-जगत के संबंध में सूक्ष्म और विस्तृत गहन अनुभव के कारण ही वे 'रामचरित मानस' में जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित कर सके। इसमें उनके हृदय की विशालता, भाव प्रसार की शक्ति और मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान पूरे उत्कर्ष के साथ व्यक्त हुई है। रामचरित मानस, विनय- पत्रिका, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, कवितावली, दोहावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली, रामलला नहछू, तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ हैं। तुलसीदास की रचनाओं में अनेक काव्य शैलियाँ मिलती हैं। रामचरित मानस का मुख्य छंद चौपाई है और बीच-बीच में दोहा, सोरठा, हरिगीतिका तथा अन्य छंद आते हैं। विनय पत्रिका के पद गेय हैं। कवितावली कवित्त-सवैया छंद में रचित उत्कृष्ट रचना है। दोहावली में स्फुट दोहों का संकलन है। रामचरितमानस हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। ब्रज और अवधी भाषा पर तुलसी का असाधारण अधिकार था। मानस के छंदों के प्रारम्भ में उन्होंने संस्कृत भाषा का अधिकार पूर्ण प्रयोग किया है। इनके काव्य में अलंकार प्रयत्न साध्य न होकर स्वाभाविक रूप से काव्य की शोभा बढ़ाते हैं। ये भक्तिकाल की सगुण धारा के राममार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं। लोकमंगल से आपूरित इनका साहित्य वर्तमान परिवेश में भी प्रासंगिक है।

कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निज पद प्रीति देखि मनभावा॥
रघुपति चरन कमल सिरु नाई। गयउ गगन आपनि गति पाई॥
ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी के आश्रम पगु धारा ॥
सबरी देखि राम गृह आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए॥
सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर वनमाला॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई॥
प्रेम मगन मुख वचन न आवा। पुनि मुनि पद सरोज सिर नावा॥
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

दोहा : कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहूँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥

जातिपाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ॥
नवधा भगति कहऊँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥

दोहा : गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा॥
छठ दम सील बिरति बहु करमा । निरत निरंतर सज्जन धरमा ॥
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा । सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियँ हरष न दीना ॥
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई । नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सोइ अतिसर प्रिय भामिनि मोरें । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥
जोगि बृंद दुर्लभ गति जोई । तो कहुँ आजु सुलभ भई सोई॥
मम दरसन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा ॥
जनकसुता कइ सुधि भामिनी । जानहि कहु करिबरगामिनी॥
पंपा सरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई॥
सो सब कहिहि देव रघुवीरा । जानतहूँ पूछहु मतिधीरा ॥

अभ्यास

बोध प्रश्न-

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) कृष्ण और सुदामा कौन थे?

(2) सुदामा की पत्नी ने उन्हें क्या सलाह दी ?

(3) शबरी के आश्रम में कौन आए थे ?

(4) शबरी ने राम को प्रेम सहित खाने को क्या दिया?

(5) शबरी के मुँह से शब्द क्यों नहीं निकल पा रहे थे?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) शबरी ने अपने आश्रम में श्री राम का किस प्रकार स्वागत किया?

(2) द्वारपाल द्वारा वर्णित सुदामा का चित्र अपने शब्दों में लिखिए।

(3) सुदामा द्वारा पोटली न दिए जाने पर कृष्ण ने कौन सी बातें याद दिलाई?

(4) बिना भक्ति के मनुष्य की स्थिति किस प्रकार की हो जाती है?

(5) सुदामा और कृष्ण की मैत्री पर अपने विचार 50 शब्दों में लिखिए।

(6) शबरी और राम प्रसंग सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण हैं, समझाइए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) श्री कृष्ण और सुदामा की मैत्री का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(2) सुदामा ने जब द्वारका का वैभव देखा तो उनके मन में क्या विचार आए?

(3) नवधा भक्ति समझाइए।

(4) **निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-**

(क) **ऐसे बेहाल बेवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।**
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए ।
पानी परात को हाथ छुयौ नहिं, नैनन के जल सो पग धोए ॥

काव्य सौन्दर्य

(क) रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ शब्द छाँटिए-

पंकज, मित्र गुरु बंधु, दीनबंधु, धर, मुकुट, किनारीदार, राजधर्म ।

(ख) दिए गए शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए-

सुशील, परलोक, अनाथन, अधीर, बेहाल, चतुराई।

आइए सीखें-

'रामचरित मानस' को महाकाव्य क्यों कहते हैं?

'सुदामाचरित' काव्य को खण्डकाव्य क्यों कहते हैं?

समझिए-

जिस काव्य के विभिन्न छंदों में किसी कथा का सूत्र बँधा रहता है, उसे प्रबन्ध काव्य कहते हैं। इसके दो भेद हैं- महाकाव्य, खण्डकाव्य।

महाकाव्य-

महाकाव्य का क्षेत्र विस्तृत होता है, इसमें किसी के जीवन की अनेकता दिखाई जाती है। यह सर्गों में बँधा रहता है। श्रृंगार, वीर या शांत रस में से किसी एक रस की प्रधानता रहती है। इसका उद्देश्य महान होता है। जैसे- 'रामचरित मानस', 'कामायनी', 'प्रिय प्रवास'

खण्डकाव्य-

इसमें किसी एक घटना या प्रसंग का वर्णन रहता है। यह अपने आप में स्वतंत्र रचना होती है। इसका क्षेत्र सीमित होता है। यह एक ही सर्ग में समाप्त हो जाता है। जैसे - पंचवटी, जयद्रथ वध।

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

1. सत्य, धर्म, प्रिय, सुलभ, सुमति, अहित, सुअवसर, संत।
2. निम्नलिखित शब्दों के 3-3 पर्यायवाची शब्द लिखिए-
   नभ, कमल, लोचन, जग, पिता।

ध्यान से पढ़िए-

ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुरु पद कमल पलोटत प्रीते ॥
बार-बार मुनि आज्ञा दीन्हीं । रघुवर जाइ सयन तब कीन्हीं ॥

चापत चरन लखनु उर लाए । सभय सप्रेम परम सचु पाए ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता । पौढ़े धरि उर पद जलजाता ॥

उठे लखनु निसि बिगत सुनि, अरुनसिखा धुनि कान ।
गुरु तें पहिलेहिं जगत्पति, जागे रामु सुजान ॥

अब समझिए-

(1) यह प्रसंग किस काव्य से लिया गया है?

(2) 'रामचरितमानस' के उपर्युक्त अंश में कौन से छन्द आए हैं?

(3) चौपाई और दोहा छन्द की क्या पहचान है?

चौपाई-

यह मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती है। तुक पहले चरण की दूसरे चरण से और तीसरे चरण की चौथे चरण से मिलती है। उदाहरण -

S SI II SI II SS II II III ISII SS

ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते । गुरु पद कमल पलोटत प्रीते ॥

प्रथम चरण **द्वितीय चरण**

SI SI II SS SS IIII SI III II SS

बार-बार मुनि आज्ञा दीन्हीं । रघुबर आइ सयन तब कीन्ही ॥

तृतीय चरण **चतुर्थ चरण**

दोहा-

यह मात्रिक छन्द है। इस छन्द के विषम चरणों में (प्रथम और तृतीय) 13-13 मात्राएँ तथा सम चरणों में (द्वितीय और चतुर्थ) में 11-11 मात्राएँ होती हैं। तुक सम चरणों में होती है।

IS III II III II III IS II SI

उठे लखनु निसि बिगत सुनि, अरुन सिखा धुनि कान

प्रथम चरण **द्वितीय चरण**

II S IISI IIII SS SI ISI

गुरु ते पहिलेहि जगत्पति, जागे राम सुजान ॥

तृतीय चरण **चतुर्थ चरण**

4. इस पाठ में किन-किन छन्दों को तुलसीदास ने अपनाया है। प्रत्येक छन्द का इसी पाठ से एक-एक उदाहरण लिखिए।

योग्यता विस्तार-

(1) 'सुदामा चरित' का विद्यालय में किसी आयोजन के समय अभिनय कीजिए।

(2) ''विपत्ति कसौटी जे कसे तें ही साँचे मीत'' रहीम के दोहे के साथ कृष्ण सुदामा की मैत्री को अपने शब्दों में लिखिए।

(3) 'रामचरित मानस' से कुछ सुभाषित चौपाई-दोहे छाँटकर अपने विद्यालय की दीवारों पर लिखिए।

(4) अपनी कक्षा में चौपाई और दोहों के माध्यम से अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

शब्दार्थ

पगा = पगड़ी, झगा = कुरता, दुपटी = दुपटटा, लढा = बैलगाड़ी, सामा = सामर्थ्य, उपानह = जूती,

चाँपि = छुपाकर, द्विज = ब्राह्मण, चकिसो= चकित सरीखा, धाम = घर, धरनी = स्त्री, सलज = लज्जाशील,

लोचन = नेत्र, पद्म = कमल, दारिद = दरिद्रता, गरीबी, सिच्छक = शिक्षक, सिगरे = पूरे, समस्त, हिये = हृदय, बामन = ब्राह्मण, भिच्छा = भिक्षा, परिच्छा = परीक्षा, खरो= खडा, विपदा = विपत्ति, गज = हाथी, बेवाइन= बिवाइयाँ, दसा = दशा, काँख = बगल में, भौन बिलोकि = भवन देखकर, कंचन के धाम = सोने के घर, झोपरी= झोपड़ी, कनकदण्ड= सोने का दण्डा, पेलि = ठेलकर, सीत= शीत ऋतु, वितीत = व्यतीत, आठहुँ जाम = आठो पहर, उलास = हर्ष, भौन= भवन, धाय= दौड़कर, पौरजन = पुरजन निवासी, पीर = पीड़ा, कोदोसवाँ = मोटे किस्म का अनाज

सरसिज = कमल, मतिमंद=मन्दबुद्धि, लोचन=नेत्र, सरोज=कमल, भामिनि=महिला, औरत

पखारे=धोये, बारिद=बादल, पद=पैर, चरण पंकज =कमल, सुरस–स्वादिष्ट, रसीले अमान=अभिमान रहित

बखानि = प्रशंसा करके परदोषा = दूसरे के दोष, पानि = हाथ, सचराचर = जड़ चेतन

* * *